हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन एक वकील के पास गया। उसने अपनी पूरी कहानी बताई। वकील ने कहा, बेफिक्र रहो! हालांकि तुमने काम बहुत बुरा किया है, लेकिन तुम बच जाओगे। कोई कानून तुम्हें फंसा नहीं सकता। तुम सुनिश्चित छूट जाओगे। इसका मैं तुम्हें आश्वासन देता हूं।

मुल्ला उठ कर खड़ा हो गया। चलने लगा तो वकील ने पूछा, कहां जाते हो? मुकदमे की तैयारी नहीं करनी?

मुल्ला ने कहा, अब क्या फायदा! क्योंकि मैंने कहानी अपने विपरीत आदमी की सुनाई थी। अगर उसकी जीत निश्चित ही है तो नाहक तुम्हें फीस देने से क्या फायदा?

मुल्ला नसरुद्दीन घर आया डाक्टर के पास से दवा लेकर। दिन में छह दफे दवा लेनी थी। सांझ होते-होते उसे चक्कर आने लगा। सिर घूमता मालूम पड़े। दुनिया घुमती हुई मालूम पड़े। वह डाक्टर के पास गया कि यह हद हो गई, मेरी बीमारी तो वैसी की वैसी है और एक नयी बीमारी मुझ पर आ गई कि दुनिया घूमती मालूम पड़ती है, सिर चकरा रहा है, खड़ा नहीं हो सकता।

डाक्टर ने कहा, यह कभी मैंने सुना ही नहीं कि इस दवा से इस तरह की कोई संभावना है। मैंने जैसा कहा था, उस ढंग से लिया या नहीं?

नसरुद्दीन ने कहा कि जिस ढंग से कहा था, बिलकुल अक्षर-अक्षर वैसा ही अनुगमन किया है।

डाक्टर ने कहा, मेरी कुछ समझ में नहीं आता। फिर सिर क्यों घूम रहा है? दुनिया क्यों घूमती मालूम हो रही है? इस दवा में ऐसा कोई गुण ही नहीं है।

नसरुद्दीन ने कहा, गुण क्यों नहीं है! इस दवा की बोतल पर साफ लिखा है कि दवा लेने के पहले हिलाओ।

डाक्टर ने कहा, इससे इसका क्या संबंध है?

उसने कहा, इसका संबंध है। दवा लेने के पहले मैं अपने शरीर को ऐसा हिलाता हूं कि बिलकुल चक्कर आने लगते हैं। और दिन में छह दफे हिलाना, कभी आधा घंटा, कभी घंटा भर हिलाता हूं, हिलाता ही चला जाता हूं। उल्टी करने का मन होता है। यह दवा तो एक झंझट है।

मैंने एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन को देखा, छाता लगाए बड़ी शान से चला आ रहा था। मैंने पूछा, नसरुद्दीन, छाता बिलकुल नया है, अभी-अभी खरीदा क्या? उसने कहा कि नहीं, तीस साल पुराना है। मैंने कहा, यह छाता तीस साल पुराना होकर इतना ताजा, इतना नया, यूं लगता है अभी-अभी कारखाने से तैयार होकर आ रहा हो!

नसरुद्दीन ने कहा कि नहीं, तीस साल पुराना है। खरीदा तो मेरे दादा ने था, फिर मेरे पिता ने भी उपयोग किया, अब मैं उपयोग कर रहा हूं। मगर छाता गजब का है, मेरे बच्चे भी उपयोग करेंगे। मैंने कहा, इसका राज तो तुम बताओ कि कैसे उपयोग करते हो?

उसने कहा, राज क्या है! राज यह है कि कई दफे बदला जा चुका है। कल ही मस्जिद में फिर बदल गया। तीस साल पुराना है, कई दफे बदला जा चुका है।

मुल्ला नसरुद्दीन मुझसे कह रहा था कि कल मेरे साथ शराबघर में बड़ी बदतमीजी हुई। उन लोगों ने मुझे धक्का देकर पीछे के दरवाजे से बाहर निकाल दिया।

मैंने पूछा, फिर तुमने क्या किया?

उसने कहा कि मैंने उन लोगों को बताया कि मैं शहर के एक प्रतिष्ठित परिवार का व्यक्ति हूं, इस तरह अशोभन व्यवहार मेरे साथ मत करो। नहीं तो पीछे पछताओगे। मैं इसका बदला चुकाऊंगा।

तो मैंने पूछा, फिर क्या हुआ?

नसरुद्दीन प्रसन्नता से बोला, फिर उन लोगों ने मुझे अंदर ले लिया और खूब धक्के मारे और सामने के दरवाजे से बाहर निकाल दिया।

– (ओशो पुस्तकों से संकलित)